प्रातःक्लास 25.3.68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। अपन को आत्मा समझ कर बैठो और बाप को याद करो। बाबा पूछते हैं जब भी कहां भाषण करते सभा में बैठते हो तो घड़ी–2 यह पूछते हो? बाबा बच्चों के भाषण सुनने चाहते हैं। तो देखें किस प्रकार भाषण करते हैं। जब कोई समझने आते हैं वा भाषण करते हो तो पहले यह प्रश्न पूछते हो कि तुम अपन को आत्मा समझते हो या देह? अपन को आत्मा समझ कर बैठो। आत्मा ही पुनर्जन्म में आती है। अपन को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा बाप को याद करो। बाप को ही याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। उनको योगाग्नि कहा जाता है। निराकार बाप निराकार बच्चों को कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे पाप कट जावेंगे। तुम पावन बन जावेंगे और मुक्ति–जीवनमुक्ति पावेंगे। मुक्ति–जीवनमुक्ति दोनों सभी को पानी है। मुक्ति के बाद जीवनमुक्ति में आना है ज़रूर। तो घड़ी–2 यह कहना पड़े अपन को आत्मा निश्चय कर बैठो। भाईयों और बहनों, अपन को आत्मा समझ कर बैठो और बाप को याद करो। यह फरमान बाप ने दिया है। यह है याद की यात्रा। बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धि का योग लगाओ तो तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के पाप भस्म हो जावेंगे। तुम पापात्मा (से) पावन आत्मा बन जावेंगे। यह तुम घड़ी–2 याद करावेंगे, समझावेंगे तब ही समझेंगे। आत्मा अविनाशी है, देह विनाशी है। अविनाशी आत्मा ही विनाशी देह धारण कर पार्ट बजाये एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा का स्वधर्म तो शान्त है। वह अपने स्वधर्म को नहीं जानती है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों । मूल बात है यह। पहले–2 तो तुम बच्चों को यह मेहनत करनी पड़े। बेहद का बाप आत्माओं को कहते हैं। इसमें कोई शास्त्र आदि की मिसाल उठाने की भी दरकार नहीं है। गीता का तुम मिसाल देते हो तो भी कहते हैं तुम सिर्फ गीता क्यों कहते हो? वेद का नाम क्यों नहीं लेते हो? बाबा ने कहा था उनसे पूछो वेद किस धर्म का शास्त्र है? धर्म तो मुख्य हैं ही चार। फिर यह वेद किस धर्म का शास्त्र है? कब कोई ने बताया? (कहते हैं आर्य धर्म के हैं।) आर्य किसको कहते हैं? हिन्दु धर्म तो है नहीं। आदि सनातन तो है ही देवी–देवता धर्म। फिर आर्य कौन–सा धर्म है? आर्य तो कोई धर्म ही नहीं। आर्य तो आर्यसमाजियों का धर्म हो गया। आर्यधर्म तो नाम ही नहीं है। किसने आर्य–धर्म स्थापन किया? तुमको वास्तव में गीता का भी नाम नहीं उठाना है। पहली बात अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम सतोप्रधान बनेंगे। इस समय सभी हैं तमोप्रधान। पहले–2 तो बाप ही का परिचय देना है। महिमा भी बाप की करनी है। वही शान्ति का सागर है। वह बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुमको शान्ति मिल जावेगी। बाप की महिमा करनी है। यह भी तुम तब कह सकेंगे जब तुम खुद बाप को याद करते होंगे। इस बात में बच्चों को बहुत कमज़ोरी है। बाप हमेशा कहते हैं याद की यात्रा का चार्ट भेजो। कोई का भी चार्ट बाबा पास नहीं आता है। अनन्य बच्चों के लिए बाबा कहते हैं दिल से हरेक पूछे हम कहां तक याद करते हैं। दिल से अथाह खुशी रहनी चाहिए। तुमको अन्दरूनी खुशी होगी तो दूसरे को भी समझाने का असर होगा। मैं भी तो देखूं अनन्य बच्चे मुझे कितना याद करते हैं। बाबा के पास राजाओं के चित्र बनाकर ले आये थे। अभी चित्र बनाना होता है प्रवृत्तिमार्ग का राजा–रानी दोनों हो। एक का क्यों? यह तो निवृत्तिमार्ग हो जाये। बाबा तो पास नहीं करेंगे ना। अपनी मत से बनाया है। कहेंगे सभी ने पास किया था। फलाने ने कहा यह बहुत अच्छा है। बाबा तो कहेंगे यह राय अच्छी नहीं। प्रवृत्तिमार्ग के राजा–रानी कहां? निवृत्तिमार्ग तो है ही सन्यासियों का। तो पहले2 मूल बात यह कहना है भाईयों और बहनों अपन को आत्मा समझो। ऐसे और कोई सतसंग में नहीं कहेंगे। वास्तव में सतसंग तो कोई है नहीं। सत का संग तो एक ही है। बाकी सभी हैं कुसंग। आत्मा को भूतों का संग करना पड़ता है। यहां है बिल्कुल नई बात। वेद आदि कुछ भी नहीं है। वेद से तो कोई धर्म स्थापन हुआ ही नहीं है तो हम वेदों को क्यों मानें? यह तो भक्तिमार्ग के अनेक वेद–शास्त्र बनाये हैं। पहले–2 तो बाप का परिचय देना चाहिए। कोई में भी यह नॉलेज नहीं है। खुद ही कहते हैं नेती–2

अर्थात् हम नहीं जानते। तो नास्तिक हुये ना। अभी बाप स्वयं कहते हैं आस्तिक बनो। अपन को आत्मा समझो। यह बातें गीता में कुछ हैं। वेदों में नहीं हैं। तुम कोई वेदों को मानने वाले नहीं हो। वेद कोई धर्म के शास्त्र नहीं। वेद, उपनिषद आदि ढेर हैं। अभी वह किस धर्म का शास्त्र है, कब कोई से पूछो, वह तो अपने ही टां–2 करते रहेंगे। तुमको तो कुछ सुनना न है। बाप तो सहज समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। बाप को भी याद करो तो पावन बन जावेंगे। पावन बन पावन दुनियां के मालिक बन सकते हो; इसलिए इस वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी को जानना है। तुम्हारा यह त्रिमूर्ति और गोला है मुख्य। इनमें सभी धर्मों का आ जाता है। पहले–2 है देवी–देवताओं का धर्म। बाबा ने मुरली में लिखा था त्रिमूर्ति, गोला बहुत बड़ा बनाकर देहली के जो मुख्य स्थान हों, जहां आवत–जावत हो वहां लगाओ। टीन के सीट ही हों। सीढ़ी में तो और धर्मों का नहीं आता है। मुख्य है यह चित्र। समझानी बिल्कुल क्लीयर है। समझाना ही इस पर है। पहले–2 तो बाप का परिचय। बाप से ही वर्सा मिलता है। पहली बात ही है एक। दूसरे चित्रों पर पर्दा डाल दो। पहले बाप का निश्चय करने बिगर तुम्हारा कुछ भी नहीं समझ सकते हैं। बाप को ही नहीं समझते तो औरर चित्रों पर ले जाना ही फाल्तू है। बाप के परिचय मिलने बिगर फाल्तू डिबेट करते रहेंगे। अलफ को समझने बिगर कुछ भी नहीं समझेंगे। बाबा के परिचय बिगर और कुछ भी बात न करो। बाप से ही बेहद का वर्सा मिलता है। बाबा ख़याल करते हैं ऐसी सहज बात क्यों नहीं समझते हैं? तुम्हारी आत्मा का बाप शिव है। तुम सब ब्रदर्स हो । तो बेहद के बाप से ज़रूर वर्षा मिलना चाहिए ना। ...फिर तुम तमोप्रधान बने हो। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। पहले–2 यह समझानी चाहिए। मूल बात ही यह है। रचयिता और रचना को जानना। कोई भी नहीं जानते हैं। ऋषि–मुनि भी नहीं जानते थे। गोया नास्तिक हो गया। तो पहले–2 बाप का निश्चय बिठा कर आस्तिक बनाना है। बाप कहते हैं तुम मुझे जानने से रेजकी सब समझ जावेंगे। मुझे न जाना है तो कुछ भी समझेंगे नहीं। मुफ़्त में टाइम वेस्ट करते हो। चित्र भी ड्रामा अनुसार जो बने हैं वह ठीक है; परन्तु बाबा सोच में बैठते हैं। तुम इतनी मेहनत करते हो फिर भी कई के बुद्धि में नहीं बैठता। कहते हैं बाबा, क्या हमारे समझाने में भूल है? वा क्या है? बाबा फट से कह देते हैं हां, तुम्हारे समझाने में भूल है। अलफ को ही नहीं समझा है तो फट से रवाना कर दो। जब तक बाप को न जाना है तब तक तुम्हारी बुद्धि में कुछ बैठेगा नहीं। फिर हम क्यों टाइम वेस्ट करें? कहते हैं बाबा कितना भी समझाते हैं किसकी बुद्धि में बैठता ही नहीं है। अलफ को न समझा है (तो) धूर भी नहीं बैठेगा। भक्तिमार्ग का ही भूसा बुद्धि में भरा हुआ है। वह निकले कैसे? याद की यात्रा से ही निकलेगा। तुम भी जब तक इस अवस्था में नहीं बैठते हो तो आँखें क्रिमिनल होती रहती हैं। सिविल तब बनेंगी जब अपन को आत्मा समझेंगे। देही–अभिमानी होंगे फिर आंखें तुमको धोखा देंगी। देही–अभिमानी नहीं हो तो माया धोखा देती है; इसलिए पहले–2 तो आत्माभिमानी बनना है। बाप कहते हैं अपना चार्ट दिखाओ तो मालूम पड़े। भल झूठ पाप .... लिखो। बेरी भी तुम्हारी ही डूबेगी। अपनी सत्यानाश करेंगे। बाबा झट समझ जावेंगे इसने सत्य लिखा है या अर्थ कुछ ही नहीं समझते। सभी बच्चों को बाबा कहते हैं चार्ट लिखो। नहीं लिखते हैं तो बाबा समझाते है। योग में नहीं रहते हैं ; इसलिए इतनी सर्विस नहीं होती। जौहर नहीं भरता है। भल बाबा कहते हैं कोटों में कोऊ ही निकलेंगे ; परन्तु तुम खुद ही योग में नहीं रहते हो तो दूसरा फिर कैसे रहेगा? सभी अपने घर जाने चाहते हैं। सन्यासियों ने कहा है सुख काग विष्टा समान है। तो वह सुख का नाम ही नहीं लेते। भक्तिमार्ग वालों से तुम ज्ञानमार्ग वालों की है लड़ाई। भक्ति तो अथाह है। बहुत चहचटा है। तुम्हारी नॉलेज तो बिल्कुल शान्ति की है। चाहते भी सभी शान्ति ही हैं। बोलो, शान्ति का सागर तो बाप ही है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो शान्ति मिल जावेगी। सतयुग में भी शान्ति है ना। नई दुनियां में होता ही है शान्ति का राज्य। बहुत बच्चे हैं सच्च नहीं बतलाते हैं। चार्ट नहीं लिखते। नॉलेज तो बहुत सस्ती है। मैगज़ीन तो लिखनी

सहज है। बहुत लिखते हैं। पहले मुख्य बात है अपन को आत्मा (समझ) शिवबाबा को याद करो। ऐसे शिवबाबा के पुजारी तो ढेर हैं। मूल बात है पहले अपन को आत्मा समझना, फिर बाप को याद करना है। बाप कहते हैं मनमनाभव। यह अक्षर भी न करो। हिन्दुस्तान की है ही हिन्दी भाषा। फिर संस्कृत दूसरी भाषा क्यों? गवर्मेन्ट क्यों संस्कृत पर जोर देती है? वह तो काम आने ही नहीं हैं। तो इन भाषाओं आदि को छोड़ दो। पहले–2 तुम भाषण करो तो बोलो अपन को आत्मा समझो। बहुत हैं जो अपन को आत्मा भी समझ नहीं सकते। याद कर नहीं सकते । अपने घाटे को कोई समझ नहीं सकते हैं। कल्याण तो है ही बाप की याद में। और कोई सतसंग में ऐसे नहीं कहते कि अपन को आत्मा समझो और बाप को याद करो। बच्चे कब बाप को एक जगह बैठ कर याद करते हैं क्या? उठते–बैठते तो बाप याद है ही। आत्माभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। तुम बहुत टूमच बोलते हो। बात मत पूछो। इतना बोलना तुम्हारा होना नहीं चाहिए। मूल बात है बाप को याद करने की। बस योग अग्नि से ही पावन बनेंगे। सभी दुःखी हैं। सुख मिलता ही है पावन बनने से। तुम खुद आत्माभिमानी हो किसको समझावेंगे तो किसको तीर भी लगेगा। कोई खुद विकारी है और दूसरों को कहे निर्विकारी बनो, उनको तीर लगेगा ही नहीं; क्योंकि खुद ही पतित है। यह भी ऐसे हैं। तुम खुद याद की यात्रा में रहते नहीं हो; इसलिए किसको तीर लगता ही नहीं। अभी बाप कहते हैं बीती सो बीती। पहले तो अपन को सुधारो। दिल से पूछो हम अपन को आत्मा समझ बाप को कितना याद करते हैं, जो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। हम शिवबाबा का बच्चा हूं तो ज़रूर हमको स्वर्ग का मालिक बनना चाहिए। बाप एक ही माशुक है। तुम सब हो आशुक। माशुक आकर खड़ा है तो उनके साथ बहुत लव होना चाहिए ना। लव माना याद। शादी होती है तो स्त्री का पति साथ कितना लव होता है। तुम्हारी भी सगाई हुई है ना, शादी नहीं। वह तो जब विष्णुपुरी में जावेंगे। पहले शिवबाबा पास जावेंगे ,फिर ससुर घर आवेंगे। सगाई की खुशी होती है ना। सगाई हुई और याद पक्की हुई। सतयुग में भी सगाई होती है। वहां सगाई कब टूटती नहीं। अकाले मृत्यु नहीं होती। यह तो यहां ही होता है। सगाई एक बार की, फिर अगर नहीं होती पवित्रपने में होना चाहिए ना। तो बाप समझाते हैं नॉलेज तो सहज है (बाकी) याद की यात्रा कहां है? बाप कहते हैं प्रैक्टिस करो। गृहस्थ व्यवहार में रहते याद करना है। भल नज़दीक में रहते हैं तो भी उन्नति थोड़े ही होती है। जो उस लव से आते हैं उनकी बहुत उन्नति होती है। याद ही नहीं करते तो वह लव थोड़े ही रहता है। लव हो तो शिक्षा ध(ा)रण करें। बाप का परिचय देवें। परिचय नहीं देते तो गोया लूल्हे–लंगड़े हैं। बाबा ने कहा था मन्दिरों में जो शादियों के लिए हॉल बनाते हैं उनको समझाओ; परन्तु कहां से भी समाचार नहीं आया है कि हमने ऐसे समझाया। तुम वहां भी अच्छी रीत परिचय दे सकते हो। भगवानुवाच काम महाशत्रु है और यहां तुम लोग क्या करते हो? तुम उनसे मिलकर समझा सकते हो। बोलो, बाबा ने हमको यहां भेजा है। काम कटारी चलाने लिए जिन्होंने हॉल बनाया है उनको पैगाम दो। यह काम तो महाशत्रु है, जो आदि, मध्य, अंत दुःख देते हैं। हम आपको बाप का पैगाम देने आये हैं। शिवबाबा ने हमको भेजा है। तुम तो पवित्र समयुग के मालिक थे फिर गिरे हो तो गन्दे बन पड़े हो। अभी अन्तिम जन्म फिर से पवित्र बनो। काम चिक्षा पर बैठने का हथियाला तोड़ना है। हमको यह हॉल दो तो हम सभी को यह शिक्षा देवें। सभी को काम चिक्षा से उतार ज्ञान–चिक्षा पर बिठावें। तुमने तो यह कोस घर बैठ बनाये है। एक का भी समाचार नहीं आया है कि हम ऐसे गये थे समझाने लिए। बाप ने हमको थ्रू भेजा है। धन बहुत है तो इस पाप के काम थोड़े ही लगाना चाहिए। यह धंधा छोड़ दो। कोस करने लिए तुम दुकान निकाल बैठे हो। तुम भी योग में रह कर बोलेंगे तो ... किसको तीर भी लगेगा। ज्ञान तलवार में जौहर चाहिए। वह है योग। पहले तो मुख्य है एक बात। कहते हैं हम तो बहुत मेहनत करते है। मुश्किल कोई निकलते हैं। बाप कहते हैं याद की यात्रा की यह मेहनत करो। योग में रह समझाओ रावण से हरा कर विकारी बनते हो। अभी फिर निर्विकारी बनो। काम कटारी का धंधा छोड़ो

तो तुम्हारी सभी मनो–कामनाएं पूरी हो जावेंगी। बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बाबा गुह्य–2 डायरैक्शन तो बहुत देते रहते हैं; परन्तु बच्चे पकड़ते नहीं हैं। और–2 बातों में जाने की क्या दरकार है? मुख्य बात तो बाप का पैगाम दो। खुद ही याद न करेंगे–दूसरों को कहेंगे, यह ठगी तो चलेगी नहीं। यह तो जैसे गीदी खोर हो जाते हैं। दूसरों को कहना और खुद न करना। दूसरों को कहेंगे विकार में न जाओ और खुद जावेंगे तो ज़रूर दिल खावेंगा ना। ऐसे गिदी खोर बहुत हैं। फिर दूसरों को तीर लगेगा नहीं। मूल बात को पकड़ना चाहिए। बाप कहते हैं अलफ को जानने से तुम सभी कुछ जान जावेंगे। अलफ़ बिगर कुछ नहीं। एक पंडित की भी मिसाल सुनाते हैं ना। बोला राम–2 कहने नदी पार हो जावेंगे। एक दिन पंडित को कहा चलो उस पार तो बोला बोट कहां है? कहने लगे अरे, तुमने कहा था राम–राम कहने से नदी पार जो जावेंगे तो उन्होंने निश्चय से विजय पा ली। वह था कुकर ज्ञानी। तुमको ऐसा नहीं बनना चाहिए। इसमें मेहनत है। इसमें ही फेल होते हैं। योग अक्षर निकाल दो। कहो याद। परमपिता परमात्मा की याद। परमपिता परमात्मा का अर्थ ही नहीं जानते। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं तुम याद में नहीं रहते हो; इसलिए तुमहारी सर्विस कम होती है। नहीं तो चार्ट क्यों नहीं लिखते? अहंकार रहता है ना। बाप इतनी बड़ी अथॉरिटी है ; परन्तु इतना लव थोड़े ही है। किसका थोड़ा अच्छा ज्ञान हो गया, लिखा–पढ़ी अच्छी की तो नशा चढ़ जाता है। कहा है देह अभिमानी को नशा। बाप कहते हैं तुम पावन बनेंगे ही याद की यात्रा से। मूल बात में ही कमज़ोरी होगी तो ऊँच पद पा नहीं सकेंगे। यब(यह) बाबा तो सबसे जास्ती पुरुषार्थ करता होगा। तब तो इतना ऊँच पद पाते हैं। उनको तो सर्टन है ना। स्कूल में मॉनिटर जो होगा उनके लिए सभी कहेंगे ना कि यह बहुत.. होशियार है। यह तो सबसे आगे है ना; परन्तु बहुत हैं जिनकी इनमें आँखें ही नहीं डूबती हैं। कहते हैं हमको तो शिवबाबा से लेना है यह तो खुद ही कहते हैं मैं तो जानता हूं ना बाबा है। निश्चय है। तुम ऐसे निश्चय रख नहीं सकते हो। नम्बरवन की ही बात है। यह जानते हैं हम शरीर छोड़ कर यह बनेंगे। इनका तो सबूत है ना। फिर भी मॉनिटर को मानते नहीं है। कहते हैं हम तो शिवबाबा ये(से) लेंगे। मॉनिटर से हमारा क्या काम? अरे, मॉनिटर बिगर क्या सुनेंगे? फिर तो वहां बैठ ही शिवबाबा से लो। क्यों आते हो ब्रह्मा पास वा मधुबन में? कई हैं ब्रह्मा की बात भी नहीं सुनते। ब्रह्मा को जैसे जानते ही नहीं। समझता हूं इनकी तकदीर में नहीं है। नहीं समझते हो तो जाकर घर बैठो। यहां क्यों आये हो? यह तो ब्रह्मा कुमार–कुमारियां का घर है ना। इसमें बड़ी समझ चाहिए। और कोई बातों में जाने की दरकार ही नहीं है। पहले–2 बाप का परिचय सिवाय शिवबाबा के चित्र और कोई चित्र दिखाओ ही नहीं। शिवबाबा के चित्र का अलग कमरा बना लो। दूसरा उ(द)रवाजा खोलो ही नहीं। जब पहले अलफ़ को समझे लिख कर दें। बाप का परिचय बिगर सुधरेंगे ही नहीं। बन्दरों से तुम कितना माथा मारेंगे। और सभी बातों को छोड़ पहले–2 अलफ़ की बात। एक शिवबाबा का चित्र रखो। शिवबाबा की इतनी महिमा है। शिवबाबा प्यार से भी तो चाहिए ना। (शिवबाबा से भी तो प्यार चाहिए ना) इतना प्यार किसको है नहीं। भल ब्रह्मा से है ; परन्तु शिवबाबा साथ बहुत कम है। बाबा डायरैक्शन देते हैं चार्ट भेजो। उन्नति के लिए कहते हैं देखें यह कितना याद करते हैं तो प्यार लिखेंगे। नॉलेज वाले इतना नहीं लिखेंगे। याद की यात्रा वाले लिख भेजेंगे। बेहद का प्यार इसको कहा जाता है। बाबा को फीलिंग आती है शिवबाबा में लव बिल्कुल ही नहीं है। स्त्री–पुरुष का विकार के लिए लव कितना होता है। यह बाप निर्विकारी बनाते हैं तो इनको कितना प्यार से याद करना चाहिए। चार्ट दिखाओ। मूल बात ही यह है। इससे ही तुम पावन बनेंगे। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।